आगे तक निकल जाता है कि पाठक को उसकी संवेदना को पकड़े रहना पड़ता है तभी पाठक कविता के एक छोर से दूसरे छोर को सही दिशा में मिलाने में सफल हो पाता है।

काव्य रूप

काव्य रूप में हम कविता को उसके विस्तार, उसके अन्दर समाहित पात्रों और उन पात्रों पर दिया गया पर्याप्त प्रसंगात्मक वर्णन के आधार पर प्रबंध और मुक्तक काव्य की कोटी में रखते हैं। आधुनिक समय की कविताओं में इस तरह के बंधनों को प्रायः नहीं माना जाता। उन्मुक्त होकर भावों के प्रवाह को कविता के द्वारा वाणी दी जाती है। प्राचीन समय में गद्य में साहित्य नहीं रचा जाता था। इसी कारण कवि को कविता के रूप में ही अपनी सभी बातों को प्रस्तुत करना होता था। यही कारण है कि समय में कविता को महाकाव्य, खंडकाव्य कई रूपों में देखा जा सकता है। धीरे-धीरे कविता में चम्पू काव्य ने भी स्थान पाया और विविध कथाओं को काव्य के रूप में न कहकर, उपन्यास और कहानियों और नाटक विधा ने उनका स्थान ले लिया। अतः आधुनिक समय की कविताओं के काव्यरूप का विश्लेषण करना जटिल होता है।

काव्य रूप से कविता के रचना विधान का पता लगता है। जिस प्रकार काव्य शब्द एक विशिष्ट साहित्यिक विधा का ज्ञान कराता है उसी प्रकार 'रूप' से उसकी बनावट और रचना पद्धति के विषय में पता चलता है। 'काव्य रूप' कविता के अभिव्यक्ति पक्ष के विषय में बताता है।

काव्य में रागात्मक चेतना में लिप्त होकर जब शब्द-अर्थ, छंद, लय और अलंकार, बिंब, प्रतीक, ध्वनि आदि का सौन्दर्य जब अभिव्यक्ति की रमणीयता प्रदान करता है तथा काव्य रूप की सार्थकता लक्षित होती है। कविता की अनुभूति एक अखंड विधान है उसे खंडित करके नहीं देखा जा सकता। किन्तु काव्य का विधिवत् विवेचन विश्लेषण करने हेतु उसके तत्त्वों की मीमांसा करना आवश्यक हो जाता है। कवि अपने अनुभवों को विभिन्न ढंग से अभिव्यक्त करता है, उसी काव्य में से कथा-तत्त्वों की भूमिका मुख्य रूप से उभरकर आती है। बंध की दृष्टि से काव्य रूपों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. प्रबंधकाव्य
2. निबंध काव्य
3. अबंध अथवा मुक्तक काव्य

प्रबंध काव्य–प्रबंध काव्य के अन्तर्गत मानव जीवन की एक व्यवस्थित कथा को प्रस्तुत किया जाता है।

प्रबंध काव्य के दो भेद होते हैं–महाकाव्य तथा खंडकाव्य।

Scanned with CamScanner

इसमें तीन प्रकार के काव्य आते हैं–विवरणप्रधान (2) कथा प्रधान (3) भावप्रधान

अबंधकाव्य (मुक्तक काव्य)–मुक्तक काव्य अपने आप में पूर्ण होता है अर्थात् इसमें न तो प्रबंधकाव्य के समान सुगठित कथानक होता है और न ही निबंधकाव्य की तरह एक निस्वित वस्तु क्रमबद्ध वर्णन। मुक्तक काव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है–

1. इसमें पूर्वा पर–क्रम नहीं होता।
2. यह अपने आप में पूर्ण होता है।
3. इसी किसी क्षणिक भाव विचार को अभिव्यक्ति होती है।
4. यह एक या अधिक पद्यों में रचा होता है।

भाषा-सौष्ठव

कविता में कवि को वही भाषा अपनानी चाहिए जिसमें उसको सरलता और सहजता लगे। इसी प्रकार अपनी भाषा को कलात्मकता देने के लिए कवि उसमें अलंकारों और छंदों का प्रयोग करता है। कवि अलंकारों के अद्भूत संयोग से अपने भावों को चित्रात्मक रूप प्रदान कर पाठक के सामने प्रस्तुत करता है जिससे पाठक भाव विभोर हो उठता है। आधुनिक समय में छंदोबद्ध रचनाओं का अभाव मिलता है।

लेखक प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से अपनी कविता को नया मोड़ देता है और कवि प्रत्यक्ष रूप से अपनी बात न कहकर सांकेतिक रूप से उसे प्रकट करता है जिससे कविता और भी आनन्दमयी हो उठती है।

जब कविता में प्रतीकों की योजना की जाती है तब वह परम्परागत अलंकार की अपेक्षा काव्योत्कर्ष में ज्यादा सहायक होता है। उदाहरण के लिए–

"यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो"
–अज्ञेय

इस कविता में दीप जनहित के लिए समर्पित व्यक्तित्व का प्रतीक है।

एक अन्य उदाहरण में दीपक को अलग प्रतीक के रूप में दिखाया गया है–

"सखी पतंग तो जलता ही है
दीपक भी जलता है"
– मैथिलीशरण गुप्त

यहाँ दीप प्रेम का प्रतीक है।

इस प्रकार कविता में प्रतीकों का विशिष्ट स्थान होता है।

Scanned with CamScanner

विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यावहारिक अध्ययन

कविता

जब हम कविता की परिभाषा के विषय में बात करते हैं, तो इसे शब्दबद्ध एक ढांचे में प्रस्तुत करना कठिन हो जाता है। कविता व्यक्ति की कल्पना और भावनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का नाम है जीवन से प्राप्त अनुभवों को हम कभी कभी वैचारिकता के स्तर पर प्रस्तुत नहीं करना चाहते। उनमें एक अनूठा सौन्दर्य और विचित्रता पर हम मुग्ध हो जाते हैं और उससे जन्म होता है एक कविता का। कविता कैसे प्रारंभ हो और उसकी समाप्ति कैसे की जाए इनको एक निश्चित आयाम देना उचित नहीं होता। फिर भी उसको कुछ आधारों पर स्पष्ट करने का प्रयास किया जा सकता है–

संवेदना

कविता में संवेदना उसका एक प्रमुख आधार होती है। जब हम किसी विचार को किसी भाव को कविता के माध्यम से पाठक के समझ प्रस्तुत करना चाहते हैं उसे संवेदना कहा जाता है।

संवेदना से अभिप्राय कविता की विषयवस्तु से होता है जिस पर संपूर्ण काव्यमयी पंक्तियाँ समाष्टि होती है। भावों का ताना बाना कल्पना का आरोह अवरोह और इन सबसके साथ अलंकारों का सामंजस्य इन सबको किस बात, किस ओर इंगित करने का प्रयास किया जा रहा है, यह होती है कविता की मूल संवेदना।

जब कवि कविता का निर्माण करता है तब वह निरंतर अपनी चित्रात्मकता रचनात्मकता की विभिन्न छवियों को अपनी लेखनी से वाणी देता चलता है। जब पाठक उसको पढ़ता है तो वह भी कवि के साथ उन कल्पना की लहरों में निरंतर ऊपर नीचे तैरता चलता है और जब कविता की समाप्ति होती है तो उससे प्राप्त संवेदना को जानकर पाठक अभिभूत हो जाता है। कवि कविता की कल्पना में इतना

Scanned with CamScanner

महाकाव्य–महाकाव्य जैसा की शब्द से ही प्रतीत होता है, काव्य की उत्कृष्टता एवं श्रेष्ठता का सूचक है।

महाकाव्य के अन्तर्गत निम्नलिखित विशेषताओं को आवश्यक माना गया है–

कथावस्तु–ऐतिहासिक अर्थात् प्रसिद्ध हो।

नायक–उच्चकुलोत्पन्न हो अथवा दैव हो।

रस–सभी रसों का समावेश हो और मुख्य रूप से शृंगार, वीर या शांत रस हो।

जीवन एवं प्रकृति रूप–जीवन की संस्कृति की महाकाव्य में झलक होनी चाहिए तथा उसमें प्रकृति के भी विविध रूपों का चित्रण होना चाहिए।

रचना शैली–महाकाव्य में कम-से-कम आठ सर्ग होते हैं उसमें एक सर्ग के अंत में छन्द परिवर्तन होता है तथा आगे आने वाले सर्ग की सूचना दी जाती है। महाकाव्य में आरंभ में मंगलाचरण, सज्जन प्रशंसा होती है।

प्रयोजन : प्रयोजन महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का प्रयोजन होता है।

खंडकाव्य–प्रबंधकाव्य के ही भेद खंडकाव्य में भी कथा योजना व्यवस्ति होती है। इसमें मानव जीवन के विविध पक्षों के चित्रण की अपेक्षा किसी अंश विशेष का वर्णन होता है। किन्तु अंश संक्षिप्त होने पर भी प्रभावशाली तथा स्वतः पूर्ण होता है। खंडकाव्य के मुख्य लक्षण है–

1. कथानक–प्रख्यात, उत्पाद्य अथवा मिश्र हो।
2. नायक–वह प्रभावशाली गुणों से युक्त हो।
3. रस–कम से कम एक रस की प्रमुखता आवश्य हो।
4. जीवन व प्रकृति–इसमें जीवन के पक्ष विशेष का वर्णन हो तथा प्रकृति वर्णन भी प्रभावशाली ढंग से हो।
5. रचना शैली–कृति का नामकरण प्रधान पात्र या घटना के आधार पर हो। इसमें सर्ग विधान तथा अनेक छंदों की योजना आवश्यक नहीं है, आरंभ में मंगलाचरण भी अनिवार्य नहीं है। शैली प्रभावशाली होनी चाहिए।
6. प्रयोजन–धर्म अर्थ काम, मोक्ष में से कम से कम एक ही सिद्धि हो।

निबंधकाव्य–"निबंधकाव्य में किसी वर्णनीय वस्तु, कथा और भाव का परस्पर संबद्ध पद्यों के माध्यम से निबंधन होता है। निबंध काव्य में कवि की दृष्टि अपने प्रतिपाद्य पर ही केन्द्रित रहती है उसमें प्रकृत विषय का ही स्पष्ट वर्णन किया जाता है, जीवन एवं जगत् के इतर प्रसंगों के चित्रण का अवकाश नहीं रहता है।" (प्रसाद के काव्य रूप- डा. सुरेन्द्रनाथ सिंह)

Scanned with CamScanner